बाबा बैद्यनाथ झा

पूर्णियाँ, बिहार

१

बहुत कम दिनों की मिली है जवानी।
करो काम अच्छे बनेगी कहानी।

तुम्हें याद कैसे ज़माना करेगा,
अगर एक सुन्दर नहीं दी निशानी।

तरक्क़ी करे देश तब हो भरोसा,
कभी पेट भरतीं न बातें लुभानी।

अदाएँ दिखाकर लुभाती मुझे पर,
नहीं पास आती बड़ी है सयानी।

ग़ज़ल में रहेगी अगर धार बाबा,
सुनेंगे उसे सब कहेंगे जुबानी।

२

बिंदास नाज़नीं वह हँसकर गुज़र रही है।
क़ातिल अदा दिखाकर मदहोश कर रही है।

देखे मुझे सड़क पर नज़रें घुमा-घुमाकर,
मैं शान्त था मगर वह सुख-चैन हर रही है।

कहती न बात दिल की शरमा रही भला क्यों?
जब पाक़ .है मुहब्बत बेकार डर रही है।

अब आज मिल रहा है मुझको हसीन मौक़ा,
मेरे क़रीब आने सीढ़ी उतर रही है।

इज़हार प्यार का जब बाबा हुआ तभी से,
अब इश्क़ की कहानी हो पुर-असर रही है।